आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के जन्म दिवस पर १९ अगस्त २०१३ को इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, ११, मानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-१ के व्याख्यान भवन में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत व्याख्यान का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। व्याख्यान के साथ ही पूज्य आचार्य जी द्वारा प्रणीत पुस्तकों व दुर्लभ चित्रों की प्रेरक प्रदर्शिनी भी लगाई गई ।

सर्व प्रथम दीप प्रज्वालन कर शुभारम्भ के पश्चात् विभाग के अध्यक्ष श्री प्रकृतिरंजन गोस्वामी जी ने कार्यक्रम का प्रारम्भ करने लिए केन्द्र की सदस्य सचिवा श्रीमती दीपाली खन्ना, संस्थापिका और न्यासी डॉ. श्रीमती कपिला वात्स्यायन जी व राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के पूर्व कुलपति विद्वान् वक्ता आचार्य (प्रोफेसर) राधावल्लभ त्रिपाठी जी को मंच पर आमन्त्रित किया।

केन्द्र की संस्थापिका और न्यासी डॉ. श्रीमती कपिला वात्स्यायन जी ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में जो विचार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के विषय में अभिव्यक्त किये उनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है-

पण्डित जी एक संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। जिनका भारतीय भाषाओं पर विलक्षण अधिकार था। उनकी यात्रा बलिया से आरम्भ होती है। वे बलिया के रहने वाले थे, तथा ज्योतिष परिवार के सदस्य थे। वे पी. एच. डी. नहीं थे उनके पास डॉक्टरेट नहीं था किन्तु उनके पास ज्ञान था। ऐसा ज्ञान जो आज पूरे भारत को दीपक की तरह प्रकाशित कर रहा है। उनकी जीवन कथा भी बाण भट्ट की कथा से सम्बन्ध रखती है। कलकत्ता में विश्वभारती में उन्होंने हिन्दी भवन की स्थापना की। उन्होंने हिन्दी पर ही काम नहीं किया बल्कि उनकी संस्कृत पर भी अच्छी पकड़ थी। कलकत्ता से वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आये और फिर चण्डीगढ़ गये और गुरुमुखी में अन्ततः कार्य किया। जब ये बाण भट्ट की आत्मकथा लिख रहे थे उसी समय घर में मेरे गुरु (वासुदेवशरण अग्रवाल) हर्षचरित लिख रहे थे।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के पूर्व कुलपति आचार्य (Professor) राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने बाणभट्ट की आत्मकथा विषय पर अपना शोध एवं विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया। उपस्थित श्रोतागणों ने अत्यन्त आनन्दित होकर स्थिर व शान्तचित्त से श्रवणास्वादन करते हुए साहित्य रस का अभूतपूर्व अवगाहन किया। इस व्याख्यान का अतिसंक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

जलौघमग्ना सचराचराधरा विषाणकोट्याऽखिलविश्वमूर्त्तिना ।
समुद्धृता येन वराहरूपिणा स मे स्वयंभूर्भगवान् प्रसीदतु ॥

श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने ऐसे ही लिखना आरम्भ किया। लिखने का कारण ये भी था कि वे बाण भट्ट की आत्मकथा को अपने जीवन करीब समझते थे। उनका यह उपन्यास शुरु में विशाल भारत प्रैस ने छापा था। पण्डित जी इसे उपन्यास के स्थान पर एक कथा ही मानते थे। आचार्य द्विवेदी जी की कथा की नायिका निमुनिया है। इसका मूल नाम निपुणिका है। जिसका सम्बोधन में निमुनिया नाम हो गया है जो अस्पर्श जाति की स्त्री थी तथा पानकी दुकान चलाती थी। बहुत वर्ष बाद जब बाण राजधानी आता है तो उसका निमुनिया से सम्पर्क हो जाता है। और दोनों में संवाद प्रारम्भ होता है। इसी प्रसंग से ही आचार्य द्विवेदी जी की कथा का प्रारम्भ होता है। उसमें निमुनिया कहती है कि - ठीक है मैं तुम्हारी मण्डली छोड़कर चली आयी। क्योंकि आप मुझे जिस प्रकार वैराग्य की दृष्टि से देखते थे उसे मैं सह न पायी। यदि तुम सच में स्त्री के शरीर को मन्दिर मानते हो तो एक देव मन्दिर गलत जगह पहुँचा दिया गया है तुम मेरे साथ चलो। तो बाण भट्ट हाँ कह देता है और स्त्री का वेश बनाकर निमुनिया उसे छोटा राजकुल में ले जाती है यहाँ रास्ते जो वर्णन आचार्य द्विवेदी जी कर रहे हैं वैसा ही वर्णन रत्नावली में आता है। बाणभट्ट अंधेरे में निमुनिया के साथ जा रहे हैं तो रास्ते में सुगन्ध से बताते हैं कि इधर चम्पा है इधर जुही की क्यारी है। आचार्य द्विवेदी जी ने बड़ा ही सुन्दर वर्णन अपनी इस कथा में चित्रित किया है।

आचार्य द्विवेदी जी ने अपनी कथा को इतना विस्तृत रूप दिया है जिसमें बाण की हर्षचरित (आख्यायिका) में लिखित बाण की आत्मकथा केवल भूमिका बनकर रह गयी। उन्होंने अपने इस उपन्यास में शैव दर्शन, तन्त्र, ज्योतिष, इतिहास आदि सभी विषयों का समावेश कर दिया है। इनकी कथा के अनुसार बाण स्त्री के शरीर को एक मन्दिर मानते हैं। किसी भी साहित्य में ऐसा समावेश इनके समय के किसी विद्वान् के द्वारा किया गया हो ऐसा नहीं देखा। और इनकी अन्य कृतियों में भी नहीं देखा।